दैनिक जागरण
06.02.2018

देश में 29 फीसद मिट्टी की गुणवत्ता हो चुकी खराब

एफआरआइ में मृदा, पादप और जल विश्लेषण प्रशिक्षण शुरू

जागरण संवाददाता, देहरादून: वन अनुसंधान संस्थान (एफआरआइ) की निदेशक डॉ. सविता ने कहा कि देश की 29 फीसद मृदा की गुणवत्ता खराब हो चुकी है। यूनाइटेड नेशंस कन्वेंशन टू कॉम्बैट डिजर्टिफिकेशन (यूएनसीसीडी) के अनुसार प्रति मिनट 10 हेक्टेयर भूमि विभिन्न गिरावट प्रक्रियाओं में खराब हो रही है। ऐसे में विभिन्न प्रकार के भूमि की जांच में मृदा के परीक्षण और भूमि सुधार के लिए उपाय करना बेहद जरूरी है। यह बात उन्होंने भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद (आइसीएफआरई) से संबंधित संस्थानों के अधिकारियों और कार्मिकों के पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में कही।

सोमवार को 'एडवांस टेक्निक्स इन सॉयल, प्लांट एंड वाटर एनालिसिस' प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए निदेशक डॉ. सविता ने कहा कि वर्तमान की चुनौतियों से निपटने में यह प्रशिक्षण कारगर साबित होगा। जो कार्मिक प्रयोगशाला में प्रशिक्षण से संबंधित विषय पर काम कर रहे हैं, उन्हें आधुनिक तकनीक के बारे में भी जानकारी मिलेगी। निदेशक डॉ. सविता ने संस्थान के मृदा एवं भूमि सुधार प्रभाग की ओर से तैयार की गई मृदा स्वास्थ्य कार्ड परियोजना की भी जानकारी दी। उन्होंने बताया कि इससे देश के मृदा डाटाबेस के निर्माण में भी मदद मिल पाएगी। इस अवसर पर प्रभाग प्रमुख डॉ. विजेंद्र पाल पंवार, डॉ. पारुल भट्ट, डॉ. बीएम डिमरी आदि उपस्थित रहे।

कार्यशाला को संबोधित करतीं एफआरआइ की निदेशक डॉ. सविता • जागरण

शाह टाईम्स
06.02.2018

मिट्टी में हो रही गिरावट रोकना अहम: डॉ. सविता

एफआरआई में वन मृदा एवं भूमि सुधार प्रभाग ने आयोजित किया प्रशिक्षण कार्यक्रम

शाह टाइम्स संवाददाता

देहरादून। वन मृदा एवं भूमि सुधार प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान की ओर से एक पांच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 'एडवांस तकनीक इन सोएल, प्लांट एण्ड वाटर एनालाईसिस' विषय पर आयोजित किया जा रहा है।

भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद के अनुसंधान समर्थक अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए 5 से 9 फरवरी तक चलेगा। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य प्रयोगशाला विश्लेषण के लिए कौशल और नई तकनीकों का विकास करना है। प्रशिक्षण का शुभारंभ मुख्य अतिथि निदेशक वन अनुसंधान संस्थान डॉ सविता ने किया। उन्होंने प्रतिभागियों को वर्तमान चुनौतीपूर्ण माहौल में मृदा, पादप एवं जल जोकि लगातार घट रहे हैं, के विश्लेषण में अग्रिम तकनीकों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के महत्तव तथा वर्तमान जरूरतों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि मृदा तथा पौधों के पोषक तत्व की स्थिति उनके स्वास्थ्य के एक संकेतक के रूप में कार्य करती है। हमारी 33: वैश्विक मृदा तथा 29 प्रतिशत भारतीय मृदा पहले से ही खराब हो चुकी है। प्रति मिनट 10हेक्टेयर भूमि विभिन्न गिरावट प्रक्रियाओं में खराब होती जा रही है। इसलिये विभिन्न प्रकार के भूमि क्षरण की जाँच में मृदा का परीक्षण तथा भूमि सुधार के लिए उपायों को चुनने तथा मृदा में हो रही गिरावट को रोकना भी महत्तवपूर्ण है। उन्होंने मृदा स्वास्थ्य कार्ड परियोजना के बारे में भी संबोधित किया जोकि वन मृदा एवं भूमि सुधार प्रभाग, वन अनुसंधान संस्थान की ओ से तैयार किया गया है जिसका मकसद देश की वन मृदा का स्वास्थ्य कार्ड बनाना है। यह देश के मृदा डाटाबेस के निर्माण में सुविधा प्रदान करेगा तथा उपयुक्त निवारक उपायों की शुरूआत के लिए समय-समय पर मृदा के स्वास्थ्य स्थिति में होने वाले परिवर्तनों की निगरानी करेगा।

उदघाटन अवसर पर डॉ. विजेन्द्र पाल पंवार, प्रभाग प्रमुख, वन मृदा एवं भूमि सुधार प्रभाग, डॉ. पारूल भट्ट कोटियाल, वैज्ञानिक-डी एवं कोर्स समन्वयक ने प्रशिक्षणार्थियों को पाँच दिनों के प्रशिक्षण मॉडयूल के बारे में बताया। डॉ. बीएम डिमरी, वैज्ञानिक-डी, वन मृदा एवं भूमि सुधार प्रभाग ने प्रशिक्षण में शामिल होने पर सभी का आभार जताया।